समष्टि –अर्थशास्त्र का अर्थ– अंग्रेजी भाषा के शब्द ग्रीक भाषा के मैक्रोस से लिया गया है जिसका अर्थ है 'बड़ा' अतएव समष्टि– अर्थशास्त्र में आर्थिक समस्याओं की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के दृष्टिकोण से अध्ययन किया जाता है। इस प्रकार, समष्टि–अर्थशास्त्र को अर्थशास्त्र की उस शाखा के रूप में परिभाषित किया जाता है जो कि समस्त अर्थव्यवस्था के स्तर पर आर्थिक प्रश्नों या आर्थिक समस्याओं का अध्ययन करती है। जैसे बेरोजगारी की समस्या , मुद्रा स्फीति की समस्या , मन्दी की समस्या इत्यादि। यह समस्त अर्थव्यवस्था के स्तर पर आर्थिक चरों पर प्रकाश डालती है। जैसे सकल मांग , सकल पूर्ति , समान्य कीमत स्तर , राष्ट्रीय आय इत्यादि। ये समष्टिभावी आर्थिक चर कहलाते हैं।

एम.एच. स्पेन्सर के अनुसार "समष्टि–अर्थशास्त्र का सम्बन्ध समस्त अर्थव्यवस्था अथवा उसके बड़े–बड़े हिस्सों से है। इसके अन्तर्गत ऐसी समस्याओं का अध्ययन किया जाता जैसे बेरोजगारी का स्तर , मुद्रा स्फीति की दर , राष्ट्र का कुल उत्पादन आदि , जिनका सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के लिए महत्व होता है।

समष्टि–अर्थशास्त्र से सम्बन्धित प्रमुख विचारधाराएँ – समष्टि–अर्थशास्त्र से सम्बन्धित दो प्रमुख विचारधाराएँ :–

(1.) परम्परावादी विचारधारा

(2.) केन्जियन विचारधारा

(1.) परम्परावादी विचारधारा परम्परावादी विचारधारा का प्रतिपादन विशेष रूप से मिल , पीगू , रिकार्डो आदि अर्थशास्त्रियों ने किया है परम्परावादी अर्थशास्त्री स्वतन्त्र अर्थव्यवस्था के पक्ष में थे। स्वतन्त्र अर्थव्यवस्था वह अर्थव्यवस्था है जिसमें सरकार द्वारा उत्पादन , उपभोग या निवेश से सम्बन्धित आर्थिक क्रियाओं में हस्तक्षेप नहीं किया जाता। सरकार केवल एक पहरेदार की तरह कार्य करती है। उसका मुख्य कार्य देश में कानून और व्यवस्था को बनाए रखना एवं बाहरी आक्रमणों से देश की रक्षा करना है। यह निर्णय कि 'क्या उत्पादन करना है' 'कैसे उत्पादन करना है' तथा 'किसके लिए उत्पादन करना है' अर्थात् अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याओं का निर्धारण माँग और पूर्ति की बाजार शक्तियों द्वारा किया जाता है।

(2.) केन्जियन विचारधारा- यह विचारधारा प्रसिद्ध अर्थशास्त्री लार्ड केन्ज़ द्वारा द्वारा प्रतिपादित की गई है। उनकी विचारधारा परम्परावादी अर्थशास्त्रियों की विचारधारा की तुलना में अधिक व्यावहारिक थी। उन्होंने यह पाया कि 1930–1940 की अवधि में विश्व व्यापी मंदी की स्थिति थी। इस स्थिति में कीमतें निरन्तर कम हो रही थी इसलिए उत्पादकों के लाभ में महत्त्वपूर्ण कमी हो गई थी। इसके फलस्वरूप निवेश एवं रोजगार का स्तर कम हो गया था। इस स्थिति में केन्ज़ ने यह विचार प्रकट किया कि बेरोजगारी का परम्परावादी अर्थशास्त्रियों द्वारा प्रतिपादित समाधान समस्या को सुलझाने में असफल रहा है। बेरोजगारी समाप्त होने के स्थान पर बढ़ती जा रही थी। इसलिए उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला है कि एक अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार की

Dr. Dinesh K. Gupta
economicsdkg@gmail.com

स्थिति सामान्य स्थिति नहीं है। बेरोजगारी की स्थिति का समाधान केवल सरकार के प्रत्यक्ष हस्तक्षेप द्वारा ही संभव हो सकता हैं सरकार को रोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए निवेश एवम् उत्पादन करना चाहिए।

समष्टि अर्थशास्त्र का महत्व

समष्टि अर्थशास्त्र की उपयोगिता को निम्न बिंदुओं के रूप में स्पष्ट किया जा सकता है–

- जटिल समस्याओं का अध्ययन– आधुनिक अथर्व्यवस्था अत्यतं जटिल है, क्योकि अनेक आर्थिक तत्व एक–दूसरे पर आश्रित रहते है। अतः समष्टि अर्थशास्त्र विश्लेषण की सहायता से पूर्ण रोजगार, व्यापार चक्र आदि जटिल समस्याओं का अध्ययन हो जाता है।

- आर्थिक नीतियों के निर्माण में सहायक– सरकार का प्रमुख कार्य कुल रोजगार, कुल आय, सामान्य कीमत–स्तर, व्यापार के सामान्य–स्तर आदि पर नियंत्रण करना होता है। अतरू समष्टि अर्थशास्त्र सरकार को आर्थिक नीतियों में सहायता पहुँचाता है।

- व्यष्टि अर्थशास्त्र का सहायक– व्यष्टि आर्थिक विश्लेषण में समष्टि अर्थशास्त्र बहुत सहायक है। जैसे– एक उत्पादक अपने उत्पादन के संबधं में निणर्य लेते समय कुल उत्पादन के व्यवहार से प्रभावित होता है।

- आर्थिक विकास का अध्ययन– आर्थिक विकास का अध्ययन समष्टि अर्थशास्त्र का महत्वपूर्ण विषय है। समष्टि आर्थिक विश्लेषण के आधार पर ही अर्थव्यवस्था के आर्थिक विकास के संसाधनों एवं क्षमतओं का मूल्यांकन किया जाता है। राष्ट्रीय आय, उत्पादन एवं रोजगार के स्तर में वृद्धि करने की योजनाएं बनायी व क्रियान्वित की जाती है।

Dr. Dinesh K. Gupta
economicsdkg@gmail.com